13 July

Imp

III Day

समाजशास्त्र की प्रकृति को वैज्ञानिक नहीं माना जा सकता है :—

① वस्तुनिष्ठता का अभाव :— समाजशास्त्र को (Lack of ~~fidelity~~) Objectivity विज्ञान न मानने वालों का तर्क है कि समाजशास्त्र के अध्ययन वस्तु में वस्तुनिष्ठता का आभाव माना जाता है। वस्तुनिष्ठता का अर्थ वास्तव में पक्षपातरहित निरिक्षण द्वारा तथ्यों का उनके वास्तविक रूप में विश्लेषण ही वस्तुनिष्ठता

Scanned with CamScanner

है। दूसरे शब्दों स्वयं के भावना, विचार, आदर्श, अकांक्षाओं के रंग में न रंग कर किसी घटना को "जैसी वह है" "as it is" उसी रूप में देखना अथवा विवेचना करना वस्तुनिष्ठता है। समाजशास्त्र के अध्ययन में वस्तुनिष्ठता का अभाव पाया जाता है। जबकि भौतिक विज्ञान में ऐसा नहीं है। इसका कारण यह है कि जिस मनुष्य और समाज का अध्ययन करता है वह स्वयं भी उसका अंग होता है अन्य मनुष्यों के समान उसमें राग द्वेष, पक्षपात आदि होना स्वाभाविक है जबकि भौतिक घटनाओं में इस प्रकार की संभावना नहीं होता है। यानी के विश्लेषण में जब 'आक्सीजन' और 'हाइड्रोजन' का अध्ययन करते हैं तो उनमें न प्रेम न द्वेष होता है परन्तु परिवार धर्म, प्रथाओं, रूढ़ियों, परंपराओं का अभिन्न अंग है। समाजशास्त्रियों को समाज की प्रथाओं परंपराओं आदि का अध्ययन करना पड़ता है। इस प्रकार वस्तु निष्ठा कायम नहीं हो पाता है। इस ~~प्रकार~~ कारण समाजशास्त्र विज्ञान नहीं हो सकता है।

2. सामाजिक घटनाओं की जटिलता :— समाज में जो (complexity of social events) भी घटनाएं घटित होती है उनके कारण होते हैं। प्रत्येक समाज में एक ही घटना के अलग-अलग कारण होते हैं। कभी-कभी समय स्थान के परिवर्तन के कारण घटनाओं में परिवर्तन हो जाता है। इस प्रकार सभी का एक ढंग से वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन करना संभव नहीं है।

लुण्डबर्ग ने कहा है कि "मानव समूह का व्यवहार से संबंधित एक वास्तविक विज्ञान होने के लिए संभवता एक सबसे बड़ी बाधा उसकी अध्ययन वस्तु की जटिलता है"।

सामाजिक घटनाओं की जटिलता और परि-

Scanned with CamScanner

परिवर्तनशीलता के कारण ही कई विद्वान इसे विज्ञान कहने से इन्कार करते हैं।

3. सार्वभौमिकता का अभाव :— कुछ समाजशास्त्री (Lack of Universality) यों का मानना है कि समाजशास्त्र में जो सिद्धांत प्रतिपादित (बनाए) किए जाते हैं वे सभी स्थानों पर एक जैसे लागू नहीं होते हैं। जैसे- भारत में बाल अपराध के पारिवारिक विघटन के कारण से संबंधित अगर कोई सिद्धांत दिया गया है तो वह सिद्धांत अमेरिका में लागू नहीं हो सकता है क्योंकि प्रत्येक स्थान पर सामाजिक परिस्थितियाँ एक दूसरे से अलग होती हैं। इतना ही नहीं एक अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्षों को दूसरी घटना पर लागू भी नहीं किया जा सकता।

(Social events cannot be measured)

4. समाजशास्त्र में सामाजिक घटनाओं को मापा नहीं जा सकता :— सामाजिक घटनाएँ अमूर्त होती हैं इन्हें एक निश्चित तौर में नहीं मापा जा सकता है और इसी कारण प्राकृतिक विज्ञान की तरह कसौटी में समाजशास्त्र में यथार्थता नहीं पायी जाती है। उदा:— माता पिता के संबंध या ~~सहयग~~ सहयोग, संघर्ष आदि के बारे में केवल बात-चीत ही कि जा सकती है उन्हें पैमाने या अंकों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। इसी गुण के अभाव के कारण समाजशास्त्र विज्ञानों की कोटी में नहीं आ सकता है।

(5) समाजशास्त्र में प्रयोगशाला नहीं है :— अनेक (No laboratory in sociology) विद्वानों का कथन है कि भौतिक विज्ञान की तरह इस शास्त्र में

-शाला पद्धति का प्रयोग नहीं हो सकता है। भौतिक वैज्ञानिक किसी भी मौसम या समय में कोई भी अध्ययन अपनी प्रयोगशाला में कर सकते हैं। "समाजशास्त्र यदि एक परिवार में सास बहू कड़वे व्यवहार का अध्ययन करना हो तो उसे एक निश्चित प्रयोगशाला में रखकर अध्ययन करना संभव नहीं होगा"। किसी डाकू में भी प्रयोगशाला पद्धति लागू नहीं हो सकती है। इन्हीं कठिनाइयों के कारण समाजशास्त्र विज्ञान नहीं हो सकता है।

(Unable to predict of sociology)

6. समाजशास्त्र भविष्यवाणी करने में असमर्थ :-
समाजशास्त्र भविष्यवाणी करने में असमर्थ है, इसके विपरीत प्राकृतिक या भौतिक विज्ञानों में यह विशेषता पर्याप्त मात्रा में पायी जाती है। उदा- "एक कागज को यदि आग में डाल दिया जाए तो वह जल जाएगा परन्तु सामाजिक घटना के बारे में यह भविष्यवाणी करना कठिन है" उदा- "यदि कभी कोई व्यक्ति थप्पड़ का जवाब थप्पड़ से दे सकता है और कभी यह भी संभव है कि वह शांत भी रह सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसका समाजीकरण किस संस्कृति में हुआ है।" समाजशास्त्र में यह भी मत है कि सामाजिक घटनाओं में हमेशा परिवर्तन होते रहते हैं और इस आधार पर भविष्यवाणी करना संभव नहीं है"।

इस प्रकार निम्नलिखित तर्कों पर यह कहा गया है कि समाजशास्त्र विज्ञान नहीं है परन्तु आज समाजशास्त्र में वैज्ञानिकता लाने के लिए अनेक पद्धतियों का विकास हो चुका है। इसलिए समाजशास्त्र को एक सैद्धान्तिक विज्ञान माना जाता है।

Scanned with CamScan